P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11*(Supplementary Issue) July- 2018
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

# ''जहाँ फार्म ही कण्टेन्ट है'' हिम्मत शाह की जोखिम भरी शिल्परचना

**कृष्णा महावर**
असिस्टेंट प्रोफेसर,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

**सारांश**

हिम्मतशाह समकालीन भारतीय कला की दुनिया में पूरी तरह से एक 'आउटसाइडर' या अपने ढंग के अजनबी है। साठ के दशक में से ही उनका नाम कला की दुनिया में आदर से लिया जाता था। सत्तर के दशक में भी हिम्मत शाह बराबर सक्रिय रहे, चर्चा में भी रहें, स्वामीनाथन सरीखे नाम उनके प्रशंसक थे। 'दिनमान' साप्ताहिक ने उन पर दो बार आवरण कथाऐं प्रकाशित की। नब्बे के दशक में जब कला बाजार ऊँचाइयों पर जा रहा था तब हिम्मत शाह सरीखे कलाकार हाशिये पर दिखाई दिये।

आज हिम्मतशाह की मुख्य पहचान एक मूर्ति शिल्पी के रूप में होने लगी हैं हालांकि उन्होंने शुरू से ही कई माध्यों में कार्य किया। तैलरंग, जलरंगी चित्र, रेखांकन, कोलाज, जले हुये कागज से तैयार किये गये म्यूरल, सिरेमिक्स, मूर्तिशिल्प, सीमेंट, कंक्रीट, जाली, लोहे के सरियों आदि किसी भी माध्यम और रचना सामग्री में उन्होंने अभिव्यक्ति दी। एक बार उन्होंने कला समीक्षक विनोद भरद्वाज से कहा ''हो सकता है कल मैं नृत्य करने लगूं।'' दरअसल उनकी प्रतिभा असीमित है।

हिम्मतशाह के बनाये 'हेड' समकालीन भारतीय कला की एक बड़ी उपलब्धि माने जाते हैं। 'ग्रुप 1890' के भी वे फाउण्डर मेम्बर रहे। फक्कड़पन हिम्मतशाह में रचा बसा था और हर स्तर पर जोखिम उठाने के पक्ष में रहते थे। 'साहस पहली चीज है। उसके बाद खोज का आनन्द है।'' 2003 में हिम्मत शाह को अस्पतालों में अपने स्वास्थ्य से जूझना पड़ा। वे कहते – ''मैं अस्पताल में बेहोश होकर नहीं मरना चाहता हूँ, मैं सजग हालत में मरना चाहता हूँ, मैं अपनी मृत्यु को भी देखना चाहता हूँ। हाल ही में दिल्ली स्थित किरण नादार संग्रहालय, साकेत में उनको रेट्रोस्पेक्टिव प्रदर्शनी आयोजित की गई। जहाँ उनके महत्वपूर्ण कला कार्य देखने को मिले। युवा कलाकार भी उनसे खूब प्रेरणा पाते हैं।

हिम्मतशाह आज भी अपने जयपुर स्टुडियो में निरंतर अपनी कला साधना में लीन हैं।

**मुख्य शब्द :** भारतीय कला, शिल्परचना,

**प्रस्तावना**

हिम्मतशाह के शिल्प वाक्यांश है जो गहरे अनुभव से प्रकट हुये हैं लेकिन वे अंतिम नहीं है, पुनः कुछ कहना शेष रह जाता है इसलिए वे शिल्प बनाते ही चले जाते है। लेकिन शिल्पों की भाषा क्रमशः गहनतर होती जाती है। उनके शिल्पों की अर्न्तवस्तु का अमूर्तन परिणामतः फार्म का अमूर्तन दोनों के अर्न्तसम्बन्ध की तरफ इंगित करता है वे अर्न्तवस्तु को फार्म के लेवल तक ले आते है। यह सत्य हमें किसी अन्य भारतीय शिल्पकार में नहीं घटित हुआ। यह श्रम का परिणाम है। यहाँ आत्मा ही शरीर है। शरीर ही आत्मा है। कोई द्वैत नहीं। फार्म ही कण्टेन्ट है। यह रिएलाइजेशन है शिल्प में। उनके शिल्पों के सौन्दर्य उनके अवयवों के सौन्दर्य नहीं है। न ही उनके फार्म अवयवों के फार्म। फार्म के प्रकटीकरण मे मैटीरियल उतनी महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाता जितना उसका स्पेस। उनके फार्म की रचना एक लम्बे डिस्कोर्स से जन्म लेती है जो निष्क्रिय नहीं है। उनके शिल्प बाहर आते ही कुछ विशेष उद्घाटित करते हैं उसे सुनने की जरूरत है।

हिम्मत शाह ने टेराकोट की भाषा समझने में सब कुछ गवाया है। उनकी कला के प्रति इमानदारी का यह तकाजा है। शिल्प की भाषा की खोज एक मौलिक शिल्प की खोज है इसलिये उनके शिल्प विमर्श खड़ा करते है। उनके लिये शिल्प बनाना परमात्मा को एक अप्रत्यक्ष श्रद्धांजलि है। शिल्प बनाकर हिम्मत शाह स्वयं को हूत् करते है। उनका विश्वास है कि शिल्प किसी रहस्यमय

उत्सव का सिम्बोलिक रिप्रजेन्टेशन है। यदि वे रहस्य के करीब नहीं है तो वे शिल्प नहीं है।

हम उन्हें आधुनिक या उत्तर आधुनिक कह सकते है लेकिन उनका कहना है–''मैं बच्चे की तरह बनाना चाहता हूँ।'' हिम्मतशाह परवाह नही करते। वे अपनी निजता में खोज रहे सबसे बड़ी कला।

हिम्मतशाह टेराकोटा की प्लास्टिसीटी का जिस ढंग से दोहन कर शिल्पों को जन्म देते है वह बड़ी समझ से सम्भव होता है। शिल्प की सम्भावना की तलाश में हिम्मतशाह ने जो शिल्प रचनाऐं प्रकट की है वे पूर्णतः मौलिक रचनाऐं है, उनकी सृजनशीलता की भट्टी तपी हुई। हिम्मतशाह ने कला को जीया है। रिस्क उठाना मानो उनका शगल है।

**शिल्प रचना प्रक्रिया**

किसी शिल्प को जन्म देने के लिए वे मिट्टी को एक लम्बी प्रक्रिया से गुजारते है कच्ची मिट्टी से शिल्प को एक प्रारम्भिक रूप देकर उसे नाना उपायों द्वारा निखारते है। कई महिनों खुले आकाश में बारिश की फुहार में पड़े रहने देते हैं तो कभी सूरज की रोशनी में महीनों छोड देते है। कभी–कभी शिल्प को तत्काल प्रकट करने के लिए इन्सटेन्ट एक्शन में उतर आते है। बिना परवाह किये कि वर्षो की मेहनत मिट्टी में मिल सकती है। उनका कहना है– ''रचना समन्जस्य से प्रकट नहीं होती। रचना पीड़ा और अराजकता में प्रकट होती है। कभी तो क्षण में ही कोई शिल्प प्रकट है, कभी वर्षो लग सकते है। टेराकोटा की नमनीयता की गहराई को वे समझते है। 20 वर्षों से वे मिट्टी के गुणधर्मो को ही समझ रहे है। माध्यम पर उनका नियंत्रण लम्बी साधना से आया है। टेराकोटा में काम कर के जो अद्भूत रूपाकारों को उन्होने जन्म दिया है उनके समक्ष कुछ से गिने चुने शिल्प ही ठहर सकते है।''

हिम्मतशाह के लिए शिल्प बनाना प्रेम कृत्य है इसलिए वह शिल्प बनाने की प्रक्रिया में सदैव जागृत और पूरी तरह मौजूद होते है। सृजन की प्रक्रिया में उन्हे शिल्प मिल जाता है वे कहते है कि ''मै शिल्प बनाता नहीं बल्कि शिल्प हमें मिलते है मानों वे भी उनके रास्तों पर चल रहे हो और वे उन्हे पिछे से रोक कर कहते है चलो में तुम्हें प्रदर्शित करता हूँ, शिल्प को खोजना एक मित्र को खोजने जैसा है जिससे पुरानी पहचान है। उनका मानना है कि एक रास्ता है शिल्प का रास्ता जो जीवन की तरफ ले जा सकता है। अपनी गुप्त शक्तियों को वे अपने शिल्पों से मुक्त करते है। इसलिए उनके शिल्पों में जीवन होता है।''

हिम्मतशाह ने बाजार की कभी परवाह नहीं की, कभी बाजार के ट्रेण्ड से प्रभावित नहीं हुये इसलिए कला को जीया। उनके फार्म की मौलिकता के पीछे अथक श्रम की शक्ति है। खोजने की तड़प का होना और उसके लिए दिन रात श्रम करना सर्जना का अनिवार्य हिस्सा है।

उनकी ड्राईंग्स के केटेलाग कभी दो बड़े चित्रकार स्वामीनाथन और कृष्ण खन्ना ने लिखे थे जबकि हिम्मतशाह का शुरूआती दौर था। इनका कैटेलोग लिखना स्पष्ट करता है कि उन्होने हिम्मतशाह मे तब ही कैसी समभावनाऐ देख ली थी।[1]

यो तो हिम्मतशाह ने बड़े खतरे उठाये है लेकिन सबसे बड़ा खतरा उठाया है एक ऐसे माध्यम का उपयोग कर जो कि निःशेष हो जाने वाला है और एक ऐसी तकनीक का उपयोग कर जो कि संवेदनशील और सचेत बरताव की मांग करती है।

कोई चाहे तो शाह की कृतियों को उद्भुत रूप से एक ही समय में, लापरवाही से, मुक्त और अराजक तथा विशुद्ध रूप से सनक अथवा आत्मरति को समर्पित मान सकता है। शाह एक प्रतिबद्ध 'प्रोफेशनल' कलाकार रहे है। जो अपने औजारों और व्यसायिक कौशल के प्रति सच्चा है।

इस कलाकार ने अपनी स्वयं की पहचान के मूर्त स्वरूप के रूप में प्रथमतः मृत्तिका को अपनाया है उसकी सहज प्रकृति को सम्मान दिया है। वह इसे बड़ी मात्रा में खरीदते है एक लंबे अन्तराल में वे इसे गूंधकर गोले बनाते है जो एकत्र किये जाते है और फिर इन्हे बार बार बारिश में रखा जाता है और हर बार पूनः गूंधा जाता है। इस प्रक्रिया में वे मिट्टी को तरल करते है उसे लस्सी की तरह मथते है और मलमल के कपड़े में छानकर उसे और परिष्कृत करते है तथा छोटे–छोटे कंकड़ आदि को निकाल बाहर करते है। यह मिट्टी अगले कई वर्षो तक इसी विधि से पुनर्संस्कारित होती रहती है। ये कलाकार इसे अपने माध्यम के प्रति एक अनुबंध अवधि के रूप में देखते है क्योकि इसके बाद ही मिट्टी की गहरी समझ विकसित हुई है। उनके शिल्प 500 से 1200 डिग्री संटीग्रेट के मध्य के तापमान पर पकाए जाते है। उचित रंग प्राप्त करने के लिए, तापमान और समयावधि को सावधानी पूर्वक नियंत्रित किया जाता है। जबकि कलाकार द्वारा प्रयुक्त सामग्री क्षण भंगरता को प्रदर्शित करती है, वही मिट्टी की ये खुदीर्घ प्रक्रिया (प्रोसेसिंग) और इसे नियंत्रित और संवेदनशील ढंग से पकाया जाना इस भुमरी सामग्री को ऐसी वस्तु में रूपान्तरित कर देता है जो कि पत्थर की तरह मजबूत है। वे चेतन से परे विकसित होती है और फार्म के क्षेत्र में तथा आयतन, भार और स्थनिक संगठन से संबद्ध प्रश्नों से परे छानबीन करती है।

शाह, जिन्होने हमेशा अपने आप को एक विद्रोही के रूप में देखा है। जानबूझ कर स्वयं को या अपनी कला को किसी एक दृष्टि से देखने से इनकार करते है।

शाह को जो चीज एक 'आधुनिक मूर्तिकला बनाती है, वह है फार्म के प्रति उनका सहज ओर गहरा आदर भाव।' उनकी कृतियो में सभी तत्व एक सुसंगत साकल्य में संघटित होता है– सामग्री, स्पेस, संहति, रेखा एक साथ दृढ़ता से बुनी हुई है ताकि एक विशिष्ट रूपगत आस्तित्व की रचना कर सकें। लेकिन शाह ने अधिक खुली संरचनाओं के पक्ष में इस आधुनिकतावादी सांचे को समय–समय पर तोड़ा है।[2]

**परिचय**

22 जुलाई 1933 को गुजरात के गांव लोथल में जन्मे हिम्मतशाह की प्रारम्भिक स्कुली पढाई भावनगर मे हुई । जगूभाई शाह से कला का प्रारम्भिक प्रशिक्षण लेने के बाद उन्होने बम्बई में सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स में ड्राइंग का कोर्स किया। कुछ समय ड्राइंग टीचर का कार्य करने के बाद बडौदा ललित कला संकाय में दखिला

ले लिये । यहाँ उन्हे वह वातावरण मिला, जिसने उनकी विद्रोही ओर स्वाधीन आत्मा का प्रोषण किया। उन्होने एन. एस.बेन्द्रे के निर्देशन में काम किया। यही 1960 में ही उन्हे ललित कला आकादमी का प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार मिल गया। 1961 में उन्हे जम्मू कश्मीर आकादमी का गोल्ड मेडल ओर 1962 में बोम्बे आर्ट सोसायटी अवार्ड मिला। 1962 में उन्हे दुबारा राष्ट्रीय अवार्ड मिला। यानि कैरियर की शुरूआत में ही उन्हे जबरदस्त स्वीकृति मिल गई थी। 1963 में स्वामीनाथल की प्रेरणा से ग्रुप 1890 की एतिहासिक प्रदर्शनी हुई तो उसमे हिम्मतशाह भी फाउण्डर मेम्बर के रूप में शामिल थे। पं. जवाहर नेहरू ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रसिद्ध कवि (मेक्सिकी) ऑक्टेवियो पाज ने प्रदर्शनी का कैटलॉग लिखा।

1966–68 में हिम्मतशाह को फ्रान्सीसी स्कॉलरशिप की मदद से फ्रांस जाने का मौका मिला। वहाँ उन्होंने एस डब्ल्यू और कृष्णा रेड्डी से ऐचिंग का प्रशिक्षण प्राप्त किया । वापस आकर सेण्ड जेवियर्स स्कूल, अहमदाबाद के लिये तीन म्यूरल बनाये। हिम्मतशाह रेखाकंन, पेन्टिंग प्रिण्टमेकिंग मूर्तिशिल्प, सभी माध्यमों में अनोखी ऊर्जा रखते है। 1963 में श्रीधराणी दीर्घा में उनके रेखाकंनों की इरोटिक शक्ति देख कर प्रेक्षक स्तब्ध रह गये थे। वरिष्ठ कलाकारों ने हिम्मशाह को खूब सराहा पर उनका काम बिकता नही था। ग्रेटर कैलाश के मकान में हिम्मत के लिए किराया देना मुश्किल हो गया। बाद में उनके चित्र प्रसिद्ध छायाचित्रकार रघु राय ने उन्हे अपने साथ रहने का निमन्त्रण दिया। कुछ समय वह हिन्दी कवि कमलेश के साथ भी रहे। गढ़ी में स्वामीनाथन के स्टूडियों में हिम्मतशाह काम करने लगें।

बचपन में गॉव की दीवारों पर गणेश और पुस्तकालयों में महाभारत के दृश्य–चित्रित करने वाला कलाकार आज भी उसी पैशन और परेशानी के साथ सक्रिय है। विवाह नहीं किया, पर रचने का बुखार हमेशा चढ़ा रहा। हिम्मतशाह संगीत से भी बहुत प्रभावित रहे है। अमीर खान की गायकी को वह बहुत महत्वपूर्ण मानते है। वे कहते है मेरे मूर्तिशिल्पों में भी संगीत की गहरी उपस्थिति है।

हिम्मतशाह याद करते हैः– ''करोल बाग की बरसाती को जब ऑक्टोवियो पाज उनका काम देखने आये थे, हिम्मत को पता भी नहीं था कि पाज कौन हैं। वह व्यक्ति तीन घण्टे बैठा रहा, सिगरेट पर सिगरेट पीता रहा। हिम्मत के काम से पाज बहुत प्रभावित हुये थे। जले हुए कागज में कोलाज थे।''

फक्कडपन हिम्मतशाह में रचा बसा था। शुरू में जूनागढ़ के जंगलों में खूब फक्कड़ किस्म की जिन्दगी बिताई थी। एक साधु के आश्रम में और गोशाला में रहना, सोना था। लैण्डस्केप वगैरह बनाते थे। ग्यारह साल की उम्र में घर छोड़ दिया था। बचपन से ही वे इस बात से चमत्कृत थे कि हाथ से कुछ भी किया जा सकता है। जब छोटे थे, तो खेतो में धुमते हुए एक बच्चे की तरफ ध्यान गया। वह बच्चा घास नोचकर एक मोर बना रहा था। रचना के इस जादू ने हिम्मत को बहुत प्रभावित किया। बाद में बड़ोदा में प्रोफेसर बैन्द्रे से 'कला क्या है' पर बात हो रही थी। वही उदाहरण– घास से मोर बनाने का सामने आया। रचना सामग्री का अपना इस्तेमाल है और अपना एक विचार भी है। कला यही है। हिम्मत का मानना है कि पहले 12 सालों का जो अनुभव होता उसी को हम बार बार जीते है। बड़ौदा में एक बार इम्तहान छोड़ भाग गये। आठ दिन बाद आये तो बेन्द्रे ने पूछा क्यों कोई प्यार–व्यार हो गया था तो उन्होने कहा परीक्षा देने का मेरा मूड नही था। बेन्द्रे उनकी पेरशानी समझ गये। उनकी परीक्षा बाद में छुट्टियों मे ली गई। इसी बोहेमियन स्वाभाव ने हिम्मत का पीछा कभी नहीं छोड़ा।

**कलाकर्म**

बड़ौदा से बाहर आये तो जले हुये कागज पर कोलाज बनाने शुरू किये। एक बार अहमदाबाद में वे भटक रहे थे। कोई अर्थ समझ नहीं आ रहा था। एक दोस्त के ऑफिस में टाइप करने वाले कागज पर सिगरेट पीते हुए जो छेद बनने लगे उनसे प्रेरणा मिली, अद्भूत काम सामने आया। पाज को उनका यही बर्न्ट पेपर कोलाज बहुत पसन्द आया था।[3]

छठे दशक के प्रारम्भ की बर्न्ट पेपर कोलाज श्रृंखला में जहाँ भंगुर नश्वर सामग्री एक साथ रखी गई है ताकि एक दृढ़ अपरिवर्तनीय, दृश्यमान प्रभाव उत्पन्न हो सके जो कि सामग्री, स्पेस और मूर्तिकला के काम में परिप्रेक्ष्य में त्रिविमीयता को डिस्टर्ब कहती है। कागज में जली हुई आकृतियो में पहले अंधेरे किनारे तत्वतः ही आगे जाकर टेराकोटा मूर्मिशिल्पों में परिर्तित हो जाते है। यहाँ पर रूपगत विषयवस्तु का क्रमिक विकास देखने को मिलता हैं।

यद्यपि उनको मूलतः एक मूर्तिकला के रूप में देखा जाता है, तथापि एक चित्रकार के रूप में उनके प्रारंभिक प्रशिक्षण को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता उनकी कुछ नवीनतम कृतियो में हम द्वि–आयामी के साथ त्रि–आयामी को एकीकृत करने के प्रयास के गूढ़ अर्थ निकाल सकते हैं। जो कि इस प्रक्रिया में अनूठी कलाकृतियों को जन्म देते है।

उनकी टेरोकोटा कलाकृतियाँ मानव शरीर और बड़ी मात्रा में उत्पादित प्लास्टिक बोतलों की विषयवस्तु पर आधारित है जो हमारे उपभोक्तावादी समाज में बहुतायत से उपलब्ध है। इन पर कलाकार ने रंग और रेखा में एक दूसरा रूप भी गढ़ा है जो कि बोतल की द्रव्यता से सम्बद्ध है। पेंटिग स्वयं को मूर्तिशिल्प की सतह पर प्रतिपादित करती है।

अपने जादू को बनाये रखते हुये शाह हमें एक ऐसे स्पेस में ले जाते है, जहाँ प्रत्येक रेखा और बिन्दु अवष्टि हैं। व्यैक्तिक रूप में प्रत्येक मूर्तिशिल्प एक स्वायत्त और स्वतंत्र कलाकृति के रूप में डटी रहती है दूर से देखने पर, ये कृतियाँ रूप और बुनावट में समृद्ध है, निकट से निरक्षण करने पर एक ऐसी दुनिया निर्मित करती है जो एक साथ भौतिक और दृश्य संदर्भो के विविध तत्वों को समाहित किये हुये है। अंतिम परिमणाम के रूप में दर्शको को एक भव्य संरचना, एक प्रतिध्वनित लय प्राप्त होती है, यह अंतर्विरोध व आनंदप्रद तनाव का भाव पैदा करती है।

अपने काम में यह कलाकार बराबर निजी और सार्वजनिक स्पेस का, साधारण ओर असाधरण का, बड़ी

मात्रा में उत्पादित वस्तुओं का सत्ता में प्रतीको के साथ मिश्रण करता रहा है। हिम्मतशाह चीजों को एक अद्भूत नई दृष्टि से देखते है और प्रयोगात्मकता की एक रोमांचक भावना से प्रेरित होते है। उनकी उत्कृट बुद्धिमता उन्हे इस योग्य बनाती है कि वे रूप और संरचना की समस्याओं को हल कर सकें।

उनकी टेराकोटा कृतियों पर जब हम एक नजर डालते है तो वे हमें अतीत में ले जाती है। स्पेस में अपनी जगह बनाने के लिए हमें गतिशील होना होता है। ये मूर्तियाँ रूचिकर दयरों, खरोचों, बनावटों को उद्घाटित करती है और अमूर्तीकरण के स्तर तक जाती है। उनमें बनाये किसी–किसी मानव सिर को देख कर भाव मिश्र के किसी भ्रम कर बैठेगें तो किसी को देखकर कहेंगे यह मानव सिर किसी अन्य ग्रह के मानव सिर का जिवाश्म है। कभी–कभी कोई हैंड पाँच हजार वर्ष पूर्व मानव हेड के अर्काइव में ले जा सकता है।

1979 में धूमीमल दीर्घा की एक प्रदर्शनी में हिम्मतशाह का उठा हुआ हाथ भुलाया नहीं जा सकता। यह एक बहुत लम्बा हाथ था। क्या यह हाथ पानी में डुबे किसी व्यक्ति का था या अपनी उपस्थिति गिना रह हाथ है। हिम्मत की कला में ऐसे ना जाने कितने रहस्य छिपे हुये है।

उनके बनाये हैड की वजह से ही वे ज्यादा जाने जाते है परन्तु कला समीक्षक गीता कपूर थी यह मानती है कि हिम्मत किसी भी माध्यम से अपनी साम्थर्य का प्रदर्शन कर सकते है।

ओ.वी. विजयन ने बरसों पहले लिखा था– ''हिम्मतशाह जब आकृतियाँ बनाते है तो वह अतिसावधान शरीर शास्त्री (एनेटोमिस्ट) नजर आते है जब किसी अमूर्त डिजायन की बात होती तो उनमें एक संयम दिखाई देता है।''

1976 में प्रयाग शुक्ल ने लिखा – ''हिम्मतशाह हमारे उन कलाकारो में से है जो आज जो कुछ कर रहे है, उसे छोड़ कर भी नहीं, अभी भी क्या एक और नई चीज रचने लगेंगे इसके बारे में आसानी से कोई कुछ भी नहीं कह सकता।'' एक चीज छोड कर दूसरी रचने से हमारा मतलब यह नहीं कि एक कलाकृति को अधूरी छोड कर दूसरी की ओर मूड जाते है (हालांकि ऐसा भी वह कई बार करते है) बल्कि यह कि हिम्मतशाह एक माध्यम को छोडकर जैसे बडी सहजता से दूसरे माध्यम में काम करने लगते है। वे कभी किसी पुरानी, टूट फूट गई कलाकृतियों की ओर देख कहते है कि इस पर अब मैं दुबारा काम करूंगा।

आज कला बाजार मे बनने–बढ़ने से हिम्मतशाह सरीखी प्रतिभा के पुराने काम को किसी तरह हथिया लेने की छोड़ लगी हुई है। कई कलेक्टर बडी चतुराई से ऐसी कलाकृतियों को खोजने लगे है जिनके दाम आगे जा कर बढ़ जायेगें। अब उनके कार्यो की कई प्रदर्शनियो की योजनाएँ बन रही है। हाल ही में दिल्ली में स्थित किरण नादार म्यूजियम में उनकी रेट्रोस्पेक्टिव प्रदशर्नि आयोजित की गई। बरसों से ललित कला अकादमी के गढी स्टूडियों में काम कर रहें हिम्मतशाह अपने खराब स्वास्थ के बावजूद जयपुर जा कर अपनी कलाम में बड़े सपनों को पूरा करना चाहते है।

वरिष्ठ कलाकार कृष्ण खन्ना ने 1983 में आर्ट हैरिटेज द्वारा आयोजित हिम्मतशाह के मस्तकों, चहरों की एक प्रदर्शनी का कैटलोग लिखते हुए उनके स्टूडियों का वर्णन किया था। कृष्ण खन्ना स्वयं भी उन दिनों गढ़ी मै पड़ोस के एक स्टूडियों मै काम करते थे। उन्होने लिखा था– ''हिम्मत शाह का स्टूडियों कोई पुराने किस्म का स्टूडियों नही नजर आता। वह तो जादूगर की गुफा लगता है। इसमें कई तरह के मस्तक, कई आकारो और रंगों में हुए है। वे चुपचाप आपस में कोई संवाद कर रहे है और प्रेक्षक से थी उनका एक संवाद चल रहा हे। अगर हम वहाँ ज्यादा देर तक रहेंगे तो कोई हैरानी की बात नही कि हमारी भूमिकाऐ आपस में बदल जाऐ फिर कृष्ण खन्ना ने हिम्मतशाह की श्वास शैली का परिचय देते हुए बताया हैं कि कैसे वे एक मस्तक उठा कर हमें बताते है– इसका जन्म 1200 में हुआ था।''

2003 में हिम्मत को अस्पतालो में अपने स्वास्थ्य से जुझना पड़ा। मै अस्पताल में बेहोश होकर नही मरना चाहता हूँ मैं सजग हालत में मरना चाहता हूँ। मैं अपनी मृत्यु को देखना चाहता हूँ मेरे लिए यही निर्वाण है काम करते करते जाऊंगा और वापस आऊंगा और नये शरीर मे अधूरे काम को पूरा करूँगां वे हर कदम पर जोखिम उठाते रहे। साहस पहली चीज है। उसके बाद आनन्द है। आज भी उनके मन में काफी विचार हैं जैसे वे पुरानी कारो को खरीदकर वह कुछ करना चाहते है।

83 की उम्र मे आज भी इसी अराजकता के साथ काम कर रहे है।

**हिम्मतशाह पर लिखी गई पुस्तके**

1. ड्राइंग्स बाय हिम्मतशाह, पृष्ठ–395, ISBN-978-81-9291 38-2-7, मूल्य 40,000
2. हाई रिलीफ बाय हिम्मत शाह पृष्ठ–108, ISBN-978-81-9291 38-0-3 मूल्य 10,000।
3. सिल्वर पेण्टिंग बाय हिम्मत शाह, पृष्ठ– 64 ISBN-978-81-9291 38-1-0, मूल्य 10,000
4. टेराकोटा बाय हिम्मतशाह, पृष्ठ–288, ISBN-978-81-9291 38-0-3, मूल्य–40,000 5.प्रिन्ट्सः 11 प्रिण्ट्स समस्त 11 प्रिण्ट्स का सेट–20,000।[4]

**सन्दर्भ ग्रंथ सूची**

1. *क पत्रिका, लेख कोई अवधूत है – भेदमत देना, राजेश कुमार शुक्ला द्वारा, पृष्ठ–8,9,10*
2. *क पत्रिका, नुजहत काजमी, पृष्ठ–4,5,6,7, चीजो को नई दृष्टि से देखता एक विद्रोहा कलाकार*
3. *समकालीन कला, रजत जयंती अंक, हिम्मतशाहः कला को जोखिम, विनाद भारद्वाजः पृष्ठ–27,28,29*
4. *www.himmatshah.com*